

часове тѣ, лѣто то и годинѣ тѣ, и казва чи *δραι* было ушь по право и отъ него ся упрѣдѣляло истинно то значение: διὰ τὸ δρίζειν χειμῶνας τε καὶ θέρη καὶ πνεύματα, καὶ [τοὺς καιροὺς πρὸς] τοὺς καρποὺς ἐκ τῆς γῆς.— т. е. зашто то упрѣдѣляхъ зимѣ тѣ, и лѣто то и вѣтрове тѣ и времена та на плодове тѣ отъ земѣ тѣ.

Нъ ако Платонъ бы знаилъ чи *ῥα* е българскаѣ рѣчь *іара*, коѣа значи свѣтлость [въ коѣхъ е и топлина та], лесно бы разтълкувалъ рѣчь тѣ *ῥαι*, зашто има тѣхъ значенія; зашто то стари тѣ сѣхъ узначили часове тѣ по *іа-рѣ* тѣ [свѣтлость тѣ] слънца, какъ то и различни тѣ годишны времена, какъ то и плодове тѣ отъ земѣ тѣ безъ слънчовѣхъ тѣ *іарѣ* [топлинѣ] не могъхъ да станхъ *ῥιμα*—*уіарены*, уз-іарели, узрѣли! Ные о тому говорихме и другадѣ и читатели тѣ имѣхъ знание отъ рѣчь тѣ *іара*.

Послѣ продължава:

Σω. ὦ μακάριε, οὐκ οἶσθ' ὅτι τὰ πρῶτα ὀνόματα τεθέντα, κατακέχωςαι ἤδη ὑπὸ τῶν βουλομένων τραγωδεῖν, περιτιθέντων γράμματα καὶ ἐξαιρούντων, εὐστομίας ἔνεκα, καὶ πανταχῇ στρεφόντων, καὶ ὑπὸ καλλωπισμοῦ καὶ ὑπὸ χρόνου

Σω. Ἐν μὲν τοίνυν ἄρτι που ἐπορισάμεθα, ὥστε δοκεῖν τι λέγειν ἀποκρινόμενοι. Ἑρμ. Τὸ ποῖον τοῦτο; Σω. Φάναι, ὃ ἂν μὴ γινώσκωμεν, βαρβαρικόν τι τοῦτ'εἶναι· εἴη μὲν οὖν ἴσως ἂν τι τῇ ἀληθείᾳ καὶ τοιοῦτον αὐτῶν. Εἴη δὲ καὶ ὑπὸ παλαιότητος τὰ πρῶτα τῶν ὀνομάτων ἀνερεύνητα εἶναι· διὰ γὰρ τὸ πανταχῇ στρέφεσθαι τὰ ὀνόματα, οὐδὲν θαυμαστὸν ἂν εἴη εἰ ἡ παλαιὰ φωνὴ πρὸς τὴν νυνὶ βαρβαρικῆς μηδὲν διαφέρει.

Σω. Γελοῖα μὲν οἶμαι φανεῖσθαι, ὦ Ἑρμόγενης, γράμμασι καὶ συλλαβαῖς τὰ πράγματα μεμιμημένα κατάδηλα γινόμενα· ὅμως δὲ ἀνάγκη· οὐ γὰρ ἔχομεν τοῦτου βέλτιον εἰς ὅτι, ἐπανενέγκωμεν περὶ ἀληθείας τῶν πρώτων ὀνομάτων· εἰ μὴ ἄρα ὁ, ὡς περ οἱ τραγωδοποιοί, ἐπειδὴν τι ἀπορῶσιν, ἐπὶ τὰς μηχανὰς καταφεύγουσι, θεοὺς αἶροντες, καὶ ἡμεῖς οὕτως εἰπόντες ἀπαλλαγεῖμεν, ὅτι τὰ πρῶτα ὀνόματα οἱ θεοὶ ἔθεσαν, καὶ διὰ ταῦτα ὀρθῶς ἔχει ἄρα, καὶ ἡμῖν κράτιστος οὗτος τῶν λόγων, ἡ ἐκεῖνος, ὅτι παρὰ βαρβάρων τινῶν αὐτὰ παρειλήφαμεν· —εἰσὶ δὲ ἡμῶν ἀρχαιότεροι οἱ βάρβαροι— ἢ ὅτι ὑπὸ παλαιότητος ἀδύνατον αὐτὰ ἐπισκέψασθαι, ὥς περ καὶ τὰ βαρβαρικά.—

—Сокр. О любезный, не знаешь ли чѣ пьрвы тѣ гудены имяна сѣхъ за-тъмнены отъ пѣвцы тѣ, кои сѣхъ прибавяли и изваждали буквы, ради благозвучія, и сѣхъ ты всякоѣако убѣртали, за украшение и за врѣмя [т. е. за краткы и дългы].

Сокр. Едно убо прѣдъ малко добыхме, штото да ся виждаме чи казваме нѣшто си въ отговоры тѣ си. Ермог. Кое е това? Сокр. Да казваме, за онова кое то не знаѣме чи е варварско; може бы негли вѣйстинѣхъ и такова да е нѣкое си отъ тѣхъ, а може бы поради старинѣхъ тѣхъ пьрвы тѣхъ имяна сѣхъ